

डॉ. रॉबर्ट वानॉय , पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 19

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय , टेड हिल्डेब्रांट

पुरातत्व, पितृसत्तात्मक काल

पुरातत्व और बाइबिल इतिहास

हम बाइबिल में ऐतिहासिक कथनों का आकलन करने में पुरातत्व की भूमिका पर चर्चा कर रहे थे। और मैं दो बातों पर जोर देना चाहता था: एक, जहां तक साक्ष्य की व्याख्या का सवाल है, पुरातात्विक साक्ष्य अक्सर अस्थायी होते हैं। दरअसल, वह दूसरी बात थी. पहली बात पुरातात्विक खोजों के परिणामों का खंडित चरित्र था।

पुरातात्विक डेटा की व्याख्या की अस्थायी प्रकृति हम पुरातात्विक डेटा की व्याख्या की अस्थायी प्रकृति के बारे में बातचीत के बीच में थे, और मैंने आपको सोलोमन की तांबे की खान और एज़ियन-गेबर द्वारा क्षेत्र के प्रश्न और इसके अध्ययन से परिचित कराया था। नेल्सन ग्लूक द्वारा साक्ष्य। वह एज़ियन-गेबर में सुलैमान के बंदरगाह की तलाश कर रहा था, जिसका उल्लेख 1 राजा 9:26 में किया गया है। राजा सुलैमान ने एज़ियन-गेबर में जहाजों की एक नौसेना बनाई। ग्लूक को इसके लिए कोई सबूत नहीं मिला, लेकिन उन्हें तांबे के गलाने के सबूत मिले। उनकी नजर एक इमारत पर पड़ी जिसके बारे में उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि यह एक गलाने वाली भट्टी या रिफाइनरी थी। इमारत में ऐसे कमरे थे जिनकी दीवारों में छेदों की दो पंक्तियाँ थीं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वे छेद प्लम थे जिनके साथ तांबे के अयस्क को गलाने के लिए कमरे में एक मसौदा खींचा गया था। इमारत का स्थान ऐसा था कि इसे उत्तर से अराबा घाटी में आने वाली हवा का बल प्राप्त होता था। इसलिए इमारत को बस थोड़ा सा एक तरफ या थोड़ा सा दूसरी तरफ ले जाया जा सकता था, और इसे अधिक सुरक्षा मिलती; इसे इन हवाओं की पूरी ताकत प्राप्त नहीं हुई होगी। तो यह निष्कर्ष निकाला गया कि इसे उन हवाओं को इकट्ठा करने के लिए वहां रखा गया था और फिर तांबे के अयस्क को गलाने के लिए उन्हें इन प्लमों में निर्देशित किया गया था। तो उन्होंने कहा कि यह एज़ियन-गेबर के क्षेत्र में इतिहास का पहला ब्लास्ट फर्नेस था। पृष्ठ 11 पर आपकी ग्रंथ सूची में,

आपके पास नेल्सन ग्लूक के दो लेख हैं। पहला है " 1939 में एज़ियन-गेबर में दूसरा अभियान।" इसे *अमेरिकन सोसायटी ऑफ ओरिएंटल रिसर्च* (बीएसओआर) के *बुलेटिन में प्रकाशित किया गया था।* यहाँ उन्होंने उस लेख में क्या कहा है: " एज़ियन-गेबर सावधानीपूर्वक योजना का परिणाम था और इसे उल्लेखनीय वास्तुशिल्प और तकनीकी कौशल के साथ एक मॉडल स्थापना के रूप में बनाया गया था। वास्तव में, व्यावहारिक रूप से एज़ियन-गेबर का पूरा शहर, स्थान और समय को ध्यान में रखते हुए, एक अभूतपूर्व औद्योगिक स्थल था, जिसकी प्राचीन ओरिएंट के पूरे इतिहास में तुलना करने के लिए कुछ भी नहीं था। एज़ियन-गेबर पुराने फ़िलिस्तीन का पिट्सबर्ग था, और साथ ही यह सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह भी है।" इसलिए, उन्होंने इस इमारत को पाया और निष्कर्ष निकाला, जिसे बाइबिल पुरातत्व पर कई हैंडबुक में अपनाया गया, जिससे पुष्टि हुई कि सुलैमान की व्यापारिक गतिविधि एज़ियन-गेबर पर केंद्रित थी। यह एलाट के ठीक उत्तर में है, लेकिन व्यापार निस्संदेह लाल सागर के माध्यम से पूर्व की ओर जाता था।

तो यह सोचा गया कि इससे 1 राजा 9:26 पर प्रकाश पड़ता है, जहाँ यह कहा गया है कि सुलैमान ने एज़ियन-गेबर में जहाजों की यह नौसेना बनाई थी। उसने तांबे का व्यापार किया होगा, तांबे को दक्षिण और पूर्व में ले जाकर फिर वापस लाया होगा। 1 किंग्स के अध्याय 10, श्लोक 21 को देखें: " राजा सुलैमान के सभी घाले सोने के थे, और लेबनान के जंगल के महल में सभी घरेलू सामान शुद्ध सोने के थे। चाँदी से कुछ भी नहीं बनता था, क्योंकि सुलैमान के दिनों में चाँदी का मूल्य बहुत कम माना जाता था। राजा के पास हीराम के जहाजों के साथ समुद्र में व्यापारिक जहाजों का एक बेड़ा था। हर तीन साल में एक बार वह सोना, चाँदी और हाथीदांत, वानर और बबून लेकर लौटता था। राजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृथ्वी के सब राजाओं से बड़ा था।" जाहिर तौर पर वह इनमें से कई अन्य चीजों के लिए तांबे का व्यापार कर रहा था।

खैर यह अभी भी मामला हो सकता है, कि यह तांबे का व्यापार था जो एज़ियन-गेबर में शामिल था। लेकिन जो बदल गया है वह इमारत के उपयोग की उस पुस्तक की मूल व्याख्या है जिसे बाद में उन्होंने पूरी तरह से संशोधित कर दिया। यहाँ दूसरे लेख, " एज़ियन-गेबर " में, जो 1965 में लिखा गया था और *द बाइबिलिकल आर्कियोलॉजिस्ट में प्रकाशित हुआ था*, उन्होंने कहा कि वह और अन्य लोग अब सोचते हैं कि इस इमारत की दीवार में छेद केवल क्षय या लकड़ी के

जलने का परिणाम हैं। किरणें. उन्हें दीवार में बीम स्थापित करने के लिए वहां रखा गया था। उनका कहना है कि इस तरह का निर्माण कई अन्य स्थानों पर पाया गया है। प्रकाश में आए अन्य स्थानों से इसकी तुलना करने पर निष्कर्ष बिल्कुल अलग है। उन्होंने महसूस किया कि तांबे को गलाने का काम काफी अलग तरीके से किया जाता था, कोयले की आग पर गर्म किए गए छोटे कूसिबल में, जिससे तांबे के छोटे बटन बनते थे। यह काफी आदिम तरीका है. वहां तांबे का उत्पादन होता था और वह अभी भी डॉट्स खुद ही भरता है, लेकिन मैंने उसकी मूल रिपोर्ट में इस ब्लास्ट फर्नेस जैसा कुछ नहीं सुना था।

अभी हाल ही में, 1972 में बेनो रोथेनबर्ग नाम के एक व्यक्ति (यह पृष्ठ 11 के नीचे की प्रविष्टि है) ने यह पुस्तक लिखी, *तिम्ना: द वैली ऑफ द बाइबिलिकल कॉपर माइन*। उन्होंने उसी क्षेत्र में उत्खनन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि खनन गतिविधि 14^{वीं} से 12^{वीं} शताब्दी ईसा पूर्व तक ही सीमित थी। अब यदि आप एक मिनट के लिए उस पर विचार करें, तो इसका मतलब है कि सुलैमान तांबे के व्यापार में बिल्कुल भी शामिल नहीं था, क्योंकि 14^{वीं} से 12^{वीं} शताब्दी मोज़ेक युग होगा, सोलोमन का समय नहीं। रोथेनबर्ग का कहना है कि रोमन काल में उद्योग के नवीनीकरण तक, 12^{वीं} शताब्दी ईसा पूर्व के बाद पश्चिमी अरब में तांबे के खनन और गलाने की गतिविधियों का कोई सबूत नहीं है। तो उन्होंने कहा कि 12^{वीं} शताब्दी से लेकर रोमन काल तक तांबा गलाने की कोई गतिविधि नहीं थी। हालाँकि, जे. बिम्सन के लेख को देखें: (यह पृष्ठ 11 के मध्य के बारे में है) “किंग सोलोमन की खदानें? अराबा में खोजों का पुनर्मूल्यांकन”- *टिंडेल बुलेटिन* 1981। बिम्सन रोथेनबर्ग की सामग्री के साथ बातचीत करता है। और उस लेख में जो वहां सूचीबद्ध है, वह अपने निष्कर्ष के लिए एक मामला बनाता है, और मैं उसे उद्धृत करूंगा, वह कहता है, “सुलैमान के समय में अराबा में खनन और गलाने की गतिविधि का श्रेय बहुत आसानी से खारिज कर दिया गया है। अरब में खनन के इतिहास के पुनर्मूल्यांकन में, रेडियोकार्बन तिथियां अब मांग करती हैं [कि] सोलोमोनिक गतिविधि एक स्थान के लिए सबसे मजबूती से प्रतिस्पर्धा करती है।

अब, मैं इस प्रश्न को सुलझाने का प्रयास नहीं करने जा रहा हूँ कि क्या सुलैमान तांबा गलाने का काम करता था या नहीं; यह एक बहुत ही तकनीकी चर्चा बन जाती है। मैं यहां जो स्पष्ट करने का प्रयास कर रहा हूँ वह पुरातात्विक डेटा की व्याख्या की अस्थायी प्रकृति का प्रश्न है। हमारे पास

ग्लूक है जो मजबूत स्थिति में आ रहा है और फिर अपनी स्थिति बदल रहा है और फिर रोथेनबर्ग एक बिल्कुल अलग स्थिति के साथ आता है, बिम्सन एक ऐसी स्थिति के साथ आता है जो इस विचार को पुनर्स्थापित करता है कि सोलोमन वहां था, और बहस के लिए बहुत जगह है कि कैसे यह समझने के लिए कि सबूत क्या है। पुरातात्विक खोजों के मामले में अक्सर यही होता है। ये दो चीज़ें एक परिप्रेक्ष्य प्रदान करने में मदद करती हैं: साक्ष्य की खंडित प्रकृति, नंबर एक, इसलिए हम किसी ऐसी चीज़ पर निष्कर्ष नहीं निकालते हैं जो केवल इसलिए संदिग्ध है क्योंकि इसकी पुष्टि नहीं हुई है, और दूसरी बात, कई मामलों में साक्ष्य की व्याख्या की अस्थायी प्रकृति। यह मामले पर निर्भर करता है, लेकिन दीवार में छेद वाली इमारत जैसी किसी चीज़ में, आप अनुमान लगा रहे हैं। और उस तरह के साक्ष्य के साथ आपको बहुत सावधान रहना होगा। पुरातत्व अनुसंधान, किसी भी अन्य मानवीय प्रयास की तरह, त्रुटि के अधीन है। पुरातत्ववेत्ता गलतियाँ कर सकते हैं।

मुझे नहीं लगता कि ग्लूक दबाव में था। मुझे लगता है कि जिस तरह की संरचना वहां थी, कम से कम सबूतों की मेरी समझ से, अन्य स्थानों पर मौजूद नहीं थी और इसलिए उन्होंने शुरू में सोचा कि यह एक अनोखी संरचना थी। ऐसा साबित नहीं हुआ और यह वास्तव में उनके पूरे सिद्धांत में एक कुंजी थी। मुझे नहीं लगता कि यह सिर्फ दूसरे लोगों का दबाव था। उस उदाहरण में आप जानते हैं कि आपको विशेष रूप से बाइबिल की विश्वसनीयता आदि के प्रति पूर्वाग्रह रखने वाले लोगों के साथ रहना होगा। यह लगभग वही समय था जब ग्लूक का दूसरा लेख सामने आया था, ठीक उसी समय 1965 में। मैंने जो पढ़ा है, उससे आम सहमति लगती है कि इमारत गलाने वाली भट्टी नहीं थी। मिस्र में भी एक खंड है और जॉर्डन में भी एक खंड है जो वहां आता है - वे सभी वहां एक साथ आते हैं और आप उन तीन देशों में से प्रत्येक में एक मील या उससे अधिक के दायरे में हो सकते हैं। मुझे लगता है कि हमें उस प्रकाश की सराहना करनी चाहिए और उसका उपयोग करना चाहिए जो पुरातत्व पवित्रशास्त्र पर डालता है, क्योंकि इसने पवित्रशास्त्र को रोशन करने के लिए बहुत कुछ किया है और हमें पुराने नियम की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को पुरातत्व अनुसंधान के निष्कर्षों से पहले की तुलना में आज बेहतर ढंग से समझने में मदद की है। इसमें बहुत सारा मूल्य है और हमें उसकी सराहना करनी चाहिए और उसका उपयोग करना चाहिए। लेकिन हमें इसकी अपूर्णता और इसके कई निष्कर्षों की अस्थायी प्रकृति को ध्यान में रखना होगा और उस तरीके से

सावधान रहना होगा जिसमें हम कहते हैं कि इसे पढ़ने से बाइबल साबित होती है या असिद्ध होती है।

पुरातत्व संसाधन: बार... एल और आगे रोमन अंक वी पर चलते हैं। मैं बाइबिल पुरातत्व पर पत्रिकाओं को पढ़ने की अत्यधिक अनुशंसा करूंगा। कई प्रकाशन हैं, लेकिन मैं *बाइबिल पुरातत्व समीक्षा पढ़ने की सलाह दूंगा*। मुझे नहीं पता कि आप इससे परिचित हैं या नहीं, लेकिन *बाइबल समीक्षा* उन्हीं लोगों द्वारा प्रकाशित की जाती है जो इसे प्रकाशित करते हैं। वे *बाइबिल पुरातत्व समीक्षा* लेकर आए और यह काफी सफल रही क्योंकि यह काफी आकर्षक प्रकाशन है, इसमें चित्र, अधिक रंगीन चित्र, एक लोकप्रिय प्रकार का पाठ, और सम्मिलन और ऐसे विषय हैं जिन पर अक्सर ध्यान नहीं दिया जाता है। बहुत ही रूढ़िवादी दृष्टिकोण से यह समस्या है, लेकिन पुरातत्व और निकट पूर्व में क्या हो रहा है, इसके बारे में यह जानकारी का एक बड़ा स्रोत है, इसलिए मुझे लगता है कि अब इसे पढ़ना एक अच्छी बात है। मुझे लगता है कि उनके लिए एक अच्छी बात चल रही थी इसलिए वे *बाइबिल समीक्षा* लेकर आए, जो सिर्फ पुरातत्व नहीं है - इसका संबंध सामान्य रूप से बाइबिल की व्याख्या और इतिहास और धर्मशास्त्र में चर्चा से है। तिरछा काफी उदार है लेकिन यह आकर्षक, बहुत पठनीय तरीके से किया गया है। *बाइबिल पुरातत्व समीक्षा बाइबिल पुरातत्वविद्* की तुलना में एक नया प्रकाशन है। बाइबिल *पुरातत्वविद्* बहुत पीछे चला जाता है और वर्षों तक बाइबिल पुरातत्व के लिए मानक था। यह अधिक तकनीकी प्रकाशन था। इसका प्रारूप इतना आकर्षक नहीं था: यह बिना अधिक चित्रों के तथा श्वेत-श्याम में प्रकाशित होता था। औसत आम आदमी के लिए यह कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे आप उठाकर पढ़ लेते हैं। जब *बाइबिल पुरातत्व समीक्षा* सामने आने लगी, तो इसने *बाइबिल पुरातत्वविद्* को तब तक बाहर कर दिया जब तक कि उन्होंने अपनी शैली को नया रूप नहीं दिया। वे एक ऐसी शैली लेकर आए हैं जो *बाइबिल पुरातत्व समीक्षा* की तरह है, हालांकि अभी भी उतनी लोकप्रिय नहीं है और यह अभी भी अधिक तकनीकी है। लेकिन वे दो निश्चित रूप से सार्थक पत्रिकाएँ हैं: *बाइबिल पुरातत्वविद्* और *बाइबिल पुरातत्व समीक्षा*।

इसमें आपकी नज़र रखने के लिए कुछ था। बाइबिल के मानचित्रों पर इस लेख के कारण

मेरे संक्षिप्त मामले में यह था। वे कितने विश्वसनीय हैं, यह एक तरह से इस बात से संबंधित है कि हम क्या चर्चा कर रहे हैं: यह साइट की पहचान पर वापस आता है। आपने बाइबिल में पढ़ा कि अमुक स्थान पर ऐसा-ऐसा हुआ और उस स्थान का अस्तित्व ही मिट गया। यहां ढेर सारी टीले और टीले हैं। सवाल यह है कि आप किस टीले को बाइबिल स्थल के रूप में पहचानते हैं? आप ऐसा कैसे करेंगे? यह लेख बताता है कि उस क्षेत्र में बहुत सारे अस्थायी निष्कर्ष हैं।

जहां तक साइट की पहचान का सवाल है, हम इस पर बाद में चर्चा करेंगे जब हम जोशुआ पहुंचेंगे और विशेष रूप से एआई की साइट पर। यह तब की बात है जब यहोशू आकान पाप के साथ वहाँ गया और इस्राएली हार गए। फिर आखिरकार उन्होंने ए को ले लिया, लेकिन जिन पुरातत्वविदों ने उस टीले की खुदाई की है, उनका कहना है कि जोशुआ के समय में उस पर कब्जा नहीं किया गया था। कब्जे के बारे में पूरी बात उलझन में है और शायद यह बेथेल की विजय के बारे में एक कहानी है, क्योंकि पुरातत्वविदों के अनुसार, उस समय बेथेल पर कब्जा था और ए पर नहीं था। हम इस पर बाद में अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे। मेरा मानना है कि यह गलत साइट पहचान का मामला है। जिस स्थान को वे ए मान रहे हैं वह ए नहीं है। वैकल्पिक स्थलों के लिए प्रस्ताव आए हैं, और बाइबिल के मानचित्रों पर इस लेख में मैं पुरातात्विक खोजों की अस्थायी प्रकृति को उजागर करने के लिए फिर से बहुत दूर जा रहा हूँ।

यह साथी टेल हेशबोन की साइट पर चर्चा करता है। उनका कहना है कि हेशबोन का उल्लेख संख्याओं में किया गया है और वहां पुरातत्व कार्य से पता चला है कि हेशबोन उन लोगों के लिए एक दुविधा पैदा करता है जो विजय के बाइबिल खाते को अनिवार्य रूप से अंकित मूल्य पर लेते हैं। वे विजय को कांस्य युग के अंत का बताते हैं, लेकिन पुरातत्व इसकी पुष्टि नहीं करता है। फिर उन्होंने टिप्पणी की कि कई विद्वान जिन्होंने पिछली सदी में संख्या 21-30 के साहित्यिक आलोचनात्मक अध्ययन के परिणामों को गंभीरता से लिया है, वे टेल हेशबोन के पुरातात्विक निष्कर्षों से आश्चर्यचकित नहीं थे। जबकि साहित्यिक आलोचक हमेशा विवरणों पर सहमत नहीं हुए हैं, उन्होंने सर्वसम्मति से निष्कर्ष निकाला है कि संख्या 21-30 का कथा भाग ढेर से बड़े पैमाने पर संपादकीय तनाव से संबंधित है। इस खंड में उद्धृत कविता जॉर्डन साम्राज्य पर इजरायल की विजय से संबंधित है। दूसरे शब्दों में, परिच्छेद के साहित्यिक विश्लेषण ने पहले ही ऐतिहासिक पुनर्निर्माण के

लिए इसकी विश्वसनीयता के बारे में संदेह पैदा कर दिया था। पुरातत्व उत्खनन ने उन संदेहों की पुष्टि कर दी। अब आप देखिए, आप पुरातात्विक विश्लेषण के साथ साहित्यिक आलोचनात्मक विश्लेषण की दोहरी समस्या में पड़ जाते हैं, इस मामले में दोनों नकारात्मक हैं। लेकिन फिर उनका अगला पैराग्राफ मुझे दिलचस्पी देता है, क्योंकि वह कहते हैं कि यह सच है कि साहित्यिक विश्लेषण के लिए कुछ हद तक व्यक्तिपरक निर्णय की आवश्यकता होती है। बेशक यह निराशाजनक है जब एक ही पाठ के साथ काम करने वाले विभिन्न साहित्यिक आलोचक अलग-अलग निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, जैसा कि अक्सर होता है। इसे खोजने के लिए आपको साहित्य में बहुत दूर तक पढ़ने की ज़रूरत नहीं है।

लेकिन फिर वह कहते हैं, "मैं इस बात पर बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हूँ कि किसी प्राचीन पाठ का स्रोत, रूप, ऐतिहासिक और पारंपरिक आलोचना के संदेश के साथ विश्लेषण करना किसी पहाड़ी पर पंद्रह फुट के वर्ग की खुदाई करने से कमोबेश व्यक्तिपरक है। दोनों दृष्टिकोणों में निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक तैयार की गई प्रक्रियाएं शामिल हैं, फिर भी दोनों को लगभग हर कदम पर निर्णयात्मक निर्णय की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, मुद्दा यह है कि जब आप साहित्यिक आलोचना या पुरातत्व कार्य कर रहे होते हैं, तो हर कदम पर व्यक्तिपरक निर्णय होते हैं और आप उनसे बच नहीं सकते। वह कहते हैं, "क्या अलग-अलग पुरातत्व टीमों के लिए एक सदी की अवधि में एक पहाड़ी के एक ही हिस्से की बार-बार खुदाई करना संभव था, और अगर खुदाई रिपोर्ट में हमेशा निर्देशक के पास अंतिम शब्द नहीं होता, तो मुझे संदेह है कि सामान्य सहमति का पैटर्न लगभग वैसा ही होगा जैसा पिछली शताब्दी में साहित्यिक आलोचनात्मक शोध और बाइबल के साथ रहा है। दूसरे शब्दों में, हर बार जब आप ऐसा करेंगे तो आप एक अलग निष्कर्ष पर पहुंचेंगे - यह इस पर निर्भर करता है कि निर्देशक कौन है। यह इस पर निर्भर करता है कि आप ये निर्णय कैसे लेते हैं।

शैक्षणिक कार्य के साथ, उस सिद्धांत को बाहर करना कठिन है। आप किसी चीज़ की तलाश में किसी चीज़ पर आते हैं, और क्योंकि आप किसी ऐसी चीज़ की तलाश में हैं जो उस चीज़ को देखने के आपके तरीके को व्यवस्थित करती है और आपके निष्कर्ष क्या हैं, सबूत क्या हैं, और आप चीज़ों को एक साथ कैसे फिट करते हैं, यह कुछ ऐसा है जो आपके पास हमेशा रहेगा के साथ

संघर्ष करना. आपको अपने धर्मशास्त्र में और पवित्रशास्त्र को एक साथ रखने में इसके साथ संघर्ष करना होगा। आप इस या उस या उस चीज़ के लिए सबूत की तलाश में आते हैं, और संभवतः आपको वह मिल जाएगा।

वी. उत्पत्ति 11:27-उत्पत्ति 50 उत्पत्ति 11:27 विभाजन आइए पितृसत्तात्मक काल पर चलते हैं, उत्पत्ति 11:27 से उत्पत्ति 50 तक। यह एक नया प्रमुख खंड है। सबसे पहले, मुझे उत्पत्ति 11:27 में विभाजन बिंदु पर टिप्पणी करने दीजिए, जहां आपके पास वह कथन है जिसके बारे में हमने पहले बात की थी: "अब ये तेरह की पीढ़ियां हैं," और "यहां अब ये तेरह की पीढ़ियां हैं," और वह वाक्यांश "ये की पीढ़ियाँ हैं।" हमने उल्लेख किया है कि पहला वाक्यांश उत्पत्ति की पुस्तक में दस बार आता है, और यह एक प्रमुख विभाजन बिंदु है। अब यह नया खंड शुरू होता दिख रहा है। हमारी रुचि किसमें है और उसके बाद क्या है, यह उससे पहले के बारे में नहीं है, बल्कि उससे क्या निकलता है इसके बारे में है। यह इब्राहीम के बारे में है। तो आप बाइबिल के इतिहास के इस बिंदु पर आते हैं, क्योंकि उत्पत्ति 11:27 से पहले हमारे पास सभी मानव जाति का इतिहास था। आप आदम से शुरू करते हैं, आप बाढ़ की ओर बढ़ते हैं और नूह के साथ, आप फिर से शुरू करते हैं। नूह के तीन पुत्रों में से पूरी पृथ्वी आबाद थी, लेकिन इस बिंदु से हमारे पास एक विशेष परिवार का इतिहास है जिसे ईश्वर ने अपना रहस्योद्घाटन देने के लिए चुना है और जिसके माध्यम से वह रहस्योद्घाटन और मुक्ति के अपने कार्य को आगे बढ़ाएगा। तो वह सार्वभौमिक काल यहाँ विशिष्ट काल का मार्ग प्रशस्त करता है। वास्तव में, यह तीसरी बार है कि ईश्वर की शुरुआत एक परिवार से होती है। उसने ऐसा आदम के साथ किया, उसने ऐसा नूह के साथ किया, और अब सभी परिवारों में से उसने इब्राहीम को चुना।

पितृसत्तात्मक खातों की प्रामाणिकता मैं पितृसत्तात्मक खातों की प्रामाणिकता पर चर्चा करना चाहता हूँ। इस शताब्दी के आरंभ में आलोचनात्मक हलकों में कुलपतियों को वास्तव में महान व्यक्तित्व, जनजातियों के चार व्यक्तित्व, वास्तव में व्यक्ति नहीं, निश्चित रूप से ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं माना जाता था। यह वेलहाउज़ेन के दृष्टिकोण और उनका अनुसरण करने वाले लोगों का

परिणाम है। उस तरह के नकारात्मक रवैये में कुछ हद तक बदलाव आया है। पितृसत्तात्मक आख्यानों की ऐतिहासिकता पर आज आम तौर पर इस शताब्दी के आरंभिक भाग की तुलना में अधिक विश्वास है। बस इन दोनों कथनों की तुलना करें - मैं खुद वेलहौसेन से एक लेता हूँ जहाँ वह कहते हैं, "हम कुलपतियों के बारे में ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करते हैं, लेकिन केवल उस समय तक जब उनके बारे में कहानियाँ इजरायली लोगों में उभरीं। हम पितृसत्तात्मक समय के बारे में कुछ नहीं सीखते हैं, हम उस समय के बारे में कुछ सीखते हैं जब इज़राइल निर्वासन में था। उनका कहना है कि इस बाद के युग को अनजाने में इसकी आंतरिक और बाहरी विशेषताओं के साथ पुरातनता में वापस प्रक्षेपित किया गया है, और यह एक महिमामंडित मृगतृष्णा की तरह परिलक्षित होता है। हम पितृसत्तात्मक आख्यानों से पितृसत्तात्मक समय के बारे में ऐतिहासिक मूल्य के बारे में कुछ भी नहीं सीखते हैं। बल्कि, यह हमें उस समय के बारे में कुछ बताता है जिसमें इसे लिखा गया था, न कि उस समय के बारे में जिसे यह कथित तौर पर दर्ज करता है।

इस तरह के रवैये की तुलना जॉन ब्राइट से करें, जिन्होंने एक खंड लिखा है जो संभवतः इज़राइल का एक मानक इतिहास है और इसका उपयोग मुख्य संप्रदाय के सेमिनारियों, *द हिस्ट्री ऑफ़ इज़राइल*, तीसरे संस्करण में किया जाता है। जॉन ब्राइट वर्जीनिया में यूनिवर्सिटी ऑफ़ थियोलॉजिकल सेमिनरी में ओल्ड टेस्टामेंट के प्रोफेसर थे। आप इस पुस्तक को बहुत लाभ के साथ पढ़ सकते हैं; वह विलियम एफ. अलब्राइट के छात्र थे। वह एक इंजील विद्वान नहीं है, लेकिन वह आम तौर पर जर्मन विद्वानों की तुलना में अपने दृष्टिकोण में बहुत अधिक रूढ़िवादी है, और निश्चित रूप से वेलहाउज़ेन की तुलना में बहुत अधिक है। तो जब वह पितृसत्ता पर इस प्रश्न पर आता है, पृष्ठ पर। अपने तीसरे संस्करण के 92 में वे कहते हैं, "अब तक प्राप्त साक्ष्य हमें यह पुष्टि करने का पूरा अधिकार देते हैं कि पितृसत्तात्मक आख्यान इतिहास में मजबूती से आधारित हैं। लेकिन क्या हमें यहीं रुकना चाहिए? क्या हमें कुलपतियों को अवैयक्तिक कबीले आंदोलनों का प्रतिबिंब मात्र मानना चाहिए? बिल्कुल नहीं। हालाँकि हम इब्राहीम, इसहाक और याकूब के जीवन का पुनर्निर्माण करने का कार्य नहीं कर सकते, फिर भी हम विश्वासपूर्वक मान सकते हैं कि वे वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति थे। अब वह यह नहीं कहने जा रहे हैं कि पितृसत्तात्मक विवरण ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह से विश्वसनीय हैं, लेकिन वे वेलहाउज़ेन से बहुत आगे हैं और कहते हैं कि हम विश्वास के

साथ कह सकते हैं कि वे ऐतिहासिक व्यक्ति थे। अब वह अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण व्यापक हो गया है, विशेष रूप से इस देश में, यहां तक कि पिछले 25 वर्षों से आलोचनात्मक विद्वानों के बीच भी।

पितृसत्तात्मक इतिहास के प्रति न्यूनतमवादी दृष्टिकोण: थॉम्पसन और वैन सेटर्स दिलचस्प बात यह है कि हाल के दिनों में इसे फिर से चुनौती दी गई है। दूसरे शब्दों में, ऐसे लोग भी हैं जो घड़ी को वापस पुरानी वेलहाउज़ेन स्थिति की ओर मोड़ना चाहते हैं। आपकी ग्रंथ सूची में दो खंड हैं जिनके लेखकों के नाम आपको कम से कम पता होने चाहिए। टीएल थॉम्पसन, *द हिस्टोरिसिटी ऑफ द पैट्रियार्कल नैरेटिव्स*, न्यूयॉर्क और बर्लिन 1974 में प्रकाशित। वे संक्षेप में कुलपतियों की ऐतिहासिकता के प्रति इस अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण को चुनौती देते हैं, और वे प्रमुख पुस्तकें हैं।

थॉम्पसन का तर्क है कि पितृसत्तात्मक आख्यानों की ऐतिहासिकता के लिए ब्राइट के सभी साक्ष्य काफी हद तक परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित हैं, और यह उनके लिए विश्वसनीय नहीं है। अपने खंड के पृष्ठ 328 पर, थॉम्पसन कहते हैं, “मुक्ति का इतिहास नहीं हुआ। यह एक साहित्यिक विधा है जिसका अपना ऐतिहासिक सन्दर्भ है। बाइबल में ऐतिहासिक इब्राहीम का उल्लेख नहीं है।” वे कट्टरपंथी बयान हैं। आप इस तरह की किताबों की समीक्षाएँ पढ़ सकते हैं। ऐसा करना काफी अच्छी बात है; आम तौर पर काफी अच्छी प्रतिक्रिया मिली। *जर्नल ऑफ बाइबिलिकल लिटरेचर* में, जो अमेरिकी विद्वान मंडलियों और बाइबिल अध्ययनों के लिए मानक पत्रिका है, समीक्षक जो एक यहूदी विद्वान था, ने कहा, “पुस्तक का उद्देश्य उन केंद्रीय तर्कों की समीक्षा करना है जो बाइबिल के विद्वानों द्वारा पक्ष में रखे गए हैं उत्पत्ति में कुलपतियों की ऐतिहासिकता के बारे में। मेरी राय में थॉम्पसन की समीक्षा इन तर्कों का पूर्ण खंडन करने के समान है। दूसरे शब्दों में, आप कह सकते हैं कि सभी ब्राइट और अलब्राइट और ऐसे लोग जिनके पास अधिक सकारात्मक चीजें हैं, थॉम्पसन आता है और उन सबूतों पर हमला करता है जिन पर वह आधारित है। यह यहूदी विद्वान कहता है, “यह उन तर्कों का खंडन करने के समान है,” और घड़ी को वास्तव में पहले की स्थिति के संदेह की ओर मोड़ देता है। इंग्लैंड में मानक पत्रिका, *द जर्नल*

ऑफ थियोलॉजिकल स्टडीज, जो ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज में प्रकाशित होती है, में जेए एमर्टन कहते हैं, "उन्होंने यह साबित नहीं किया है कि पितृसत्ता अस्तित्व में नहीं थी, लेकिन उन्होंने दिखाया है कि परंपराओं की पर्याप्त ऐतिहासिकता इन्हें कई विद्वानों ने बहुत आसानी से स्वीकार कर लिया है। यह संभव है कि थॉम्पसन का काम अब्राहम, इसहाक और जैकब के अध्ययन में एक नया चरण लाएगा। सावधान, एक नई चुनौती है। मुझे लगता है कि जूरी अभी भी यह तय नहीं कर पाई है कि चीजें किस दिशा में आगे बढ़ेंगी। क्या लोग थॉम्पसन और वैन सेटर्स का अनुसरण करते हुए और भी अधिक संदेहपूर्ण स्थिति की ओर जा रहे हैं? या क्या चीजें इंजील प्रभाव या उससे भी अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ ब्राइट, या यहां तक कि अलब्राइट की पंक्ति में बनी रहेंगी? मुझे नहीं पता, मुझे लगता है कि यह देखना बाकी है।

केवल आपकी जानकारी के लिए, यहां इस मुद्दे पर इंजील विद्वानों द्वारा लिखे गए निबंधों की एक श्रृंखला है। आपकी शीट पर एक है, मिलर और वाइसमैन संपादकों के रूप में, *पितृसत्तात्मक कथाओं पर निबंध*। यह बिल्कुल ताज़ा है और उस पुस्तक में बहुत सारे अच्छे लेख हैं, जो वैन सेटर्स और टीएल थॉम्पसन के साथ बातचीत करते हैं। इसलिए इस समय काफी चर्चा चल रही है। मैं टीएल थॉम्पसन के बारे में एक तरफ से कह सकता हूं, देखिए वह किताब किसमें प्रकाशित हुई थी? 1974. यह लगभग 1975 की बात होगी, मैं एक शाम यहां पुस्तकालय में था और एक छात्र मेरे पास आया और कहा कि वह पुस्तकालय के दूसरे हिस्से में किसी से बात कर रहा था जिसने ट्यूबिंगन में ओल्ड टेस्टामेंट का अध्ययन किया है, और मैं मैंने सोचा कि मैं उस साथी से मिलने जाऊंगा, इसलिए मैंने ऐसा किया। मैंने जाकर उनसे बात की और हमारी दिलचस्प बातचीत हुई। मुझे पता चला कि उसका नाम टीएल थॉम्पसन था, लेकिन उस समय किताब अभी-अभी प्रकाशित हुई थी और मुझे नहीं पता था कि वह कौन था, आप जानते हैं। नाम का मेरे लिए कोई मतलब नहीं था, वह हाल ही में जर्मनी से पढ़ाई करके इस क्षेत्र में आया था और यह किताब उसका शोध प्रबंध थी। उनकी पत्नी टेंपल यूनिवर्सिटी में पद पर थीं और वे एक ट्रेलर पार्क में रह रहे थे। लगभग एक साल बाद तक टीएल थॉम्पसन का नाम मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता था, शायद इतना बाद तक भी नहीं। शायद लगभग एक महीने बाद मुझे उसकी किताब के बारे में पता चला और फिर आप जानते हैं कि बाद में इस किताब से कहानियाँ निकलीं और मुझे एहसास हुआ कि वह कौन था। उन्होंने

वास्तव में एक महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी, चाहे आप इससे सहमत हों या नहीं, लेकिन वह अपने शोध के लिए हमारी लाइब्रेरी का उपयोग कर रहे थे। मुझे लगता है कि वह और उनकी पत्नी उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय या उसके जैसे किसी स्थान पर काम करते हैं। वे इस क्षेत्र में बहुत लंबे समय तक नहीं थे।

नुजी , मारी और अन्य प्रारंभिक ग्रंथ और पितृसत्तात्मक काल

खैर, जहां से मैंने शुरुआत की थी वहां वापस जाने के लिए, थॉम्पसन और वैन सेटर्स द्वारा अधिक आलोचनात्मक रुख की ओर लौटने के इस प्रयास के खंड में उलटफेर हुआ है। आम तौर पर पितृसत्ता की ऐतिहासिकता के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण की ओर यह उलटफेर और वह उलटफेर हुआ है, जो वास्तव में पुरातत्व अनुसंधान के कारण है, केवल उन हजारों ग्रंथों से जो पितृसत्तात्मक आख्यानो के लगभग उसी समय में खोजे गए हैं, और उन्होंने इस कालखंड पर काफी प्रकाश डाला है। आइए मैं उन ग्रंथों के संबंध में आपके लिए प्रमुख संग्रहों की समीक्षा करूं। पाठ के प्रमुख निकाय पहले नुजू और मारी ग्रंथ हैं जो 18वीं शताब्दी ईसा पूर्व के हैं। मारी बाबुल से थोड़ा उत्तर में, फरात नदी पर है। इसकी खुदाई द्वितीय विश्व युद्ध से कुछ समय पहले फ्रांसीसियों द्वारा की गई थी और यह शहर लगभग 1700 ईसा पूर्व में अपने समय की एक प्रमुख शक्ति था। अब पितृसत्तात्मक काल, अब्राहम का समय, लगभग 2000 ईसा पूर्व था, इसलिए हम उसके कुछ सौ साल बाद से ठीक नीचे हैं। , जैकब के लगभग उसी समय। इसलिए युद्ध में हम्मुराबी के हाथों हारने से पहले यह अपने समय की एक प्रमुख शक्ति थी। महल में लगभग 20,000 गोलियाँ पाई गईं, और उनमें से आपके पास ऐसे ग्रंथ हैं जिनमें हम्मुराबी और ज़िमरी लिम और अन्य राजाओं के बीच पत्राचार है। आपके पास भविष्य बताने की तकनीक पर भी ग्रंथ हैं। उनकी तकनीकों में से एक बलि के जानवरों के जिगर और अंतड़ियों की जांच करना था और जिगर के आकार के जानवरों के विन्यास के आधार पर, उस तरह की चीज़ का एक निश्चित अर्थ या महत्व होता था। नाहोर शहर के कई उल्लेख हैं , जो पितृसत्तात्मक कथाओं में रिबका का घर था।

तो आपके पास ग्रंथों का वह समूह है, और फिर आपके पास कप्पाडोसियन ग्रंथ हैं, जो एशिया माइनर के पूर्वी कोने में पाए जाते हैं और 19वीं शताब्दी ईसा पूर्व के हैं, वे असीरियन व्यापारियों

के उपनिवेशों से आते हैं, जो के साथ व्यापार कर रहे थे। एशिया माइनर के लोग और जिनकी बस्तियाँ वहाँ के नगरों के बाहर थीं।

तीसरा समूह नुज़ी ग्रंथ है, और वे थोड़ा बाद में 15^{वीं} शताब्दी ईसा पूर्व में आते हैं, वे लगभग 15^{वीं} शताब्दी में पूर्वी टाइग्रिस क्षेत्र में नुज़ी के आसपास हरियन आबादी के रीति-रिवाजों को दर्शाते हैं। आपने फाइनगन पृष्ठ 65, 67 में इन नुज़ी ग्रंथों को पढ़ा, जिसमें दास गोद लेने के कानून, विवाह अनुबंध, विरासत के अधिकार और उस प्रकार के रीति-रिवाजों जैसी चीजों की चर्चा शामिल है, जो पितृसत्तात्मक कथाओं में परिलक्षित समान रीति-रिवाजों के साथ काफी मेल खाते हैं।

चौथे हैं रास शमराह ग्रंथ, 15^{वीं} और 14^{वीं} शताब्दी, फाइनगन 171-174। इन्हें 1929 में सीरिया के तट पर, आधुनिक लेबनान में, उगारिट नामक स्थान पर खोजा गया था। इन्हें कीलाकार लिपि में लिखा गया है। क्यूनिफॉर्म एक प्रकार का लेखन है जिसमें चिह्न बनाने के लिए लेखनी को मिट्टी में दबाना शामिल है। वे क्यूनिफॉर्म लिपि में लिखे गए हैं लेकिन यह एक सेमेटिक वर्णमाला भाषा है। और 1929 में इन ग्रंथों की खोज से पहले यह भाषा अज्ञात थी, जब इसे पढ़ा गया और पाया गया कि यह एक सेमेटिक भाषा है जो बाइबिल हिब्रू से काफी निकटता से संबंधित है। इसलिए उगारिटिक का अध्ययन एक नया अध्ययन बन गया, और इनमें से कुछ ग्रंथों के भाषाई अध्ययनों ने हिब्रू में कुछ व्याकरणिक विशेषताओं के साथ-साथ शब्दावली समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है, क्योंकि वे संबंधित भाषाएं हैं।

पांचवां समूह निष्पादन ग्रंथ है, जो ईसा पूर्व 20^{वीं} और 19^{वीं} शताब्दी में मिस्र से आया था और बताता है कि कैसे फिरौन ने अपने दुश्मनों पर काबू पाने के लिए जादुई शक्तियां लाने की कोशिश की थी। ऐसा करने का तरीका कटोरे पर लांछन या श्राप अंकित करना था, और फिर कटोरे को तोड़ दिया जाता था। कभी-कभी ये उपदेश बंधे हुए बंदियों की मिट्टी की मूर्तियों पर लिखे जाते थे। लेकिन उन शिलालेखों में कनान भूमि में कई स्थानों का उल्लेख किया गया है जो 20^{वीं} और 19^{वीं} शताब्दी ईसा पूर्व में कनान भूमि तक मिस्र के प्रभाव क्षेत्र की सीमा का अंदाजा देते हैं

। एबला ग्रंथ और फिर छठी, एबला ग्रंथ, लगभग 24^{वीं} शताब्दी ईसा पूर्व। यदि आप इसके बारे में कुछ पढ़ना चाहते हैं, तो मेरे पास यह ग्रंथ सूची में नहीं है, लेकिन केए किचन के पास एक पुस्तक

है *द बाइबल इन इट्स वर्ल्ड: द बाइबल एंड आर्कियोलॉजी टुडे*। एबला पर एक अध्याय है, और एबला निश्चित रूप से कुछ ऐसा है जो हालिया है और इसके बारे में बहुत कुछ नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि एबला ग्रंथों से अभी तक कुछ भी प्रकाशित नहीं हुआ है। आइए मैं आपको उनके बारे में थोड़ा बताता हूँ। वे टेल नामक स्थान पर पाए गए मर्दिख, जो बेरूत, वर्तमान सीरिया के उत्तर और पश्चिम में है। वहाँ जिस टीले की खुदाई की गई थी, उसकी पहचान 1968 में एबला के रूप में की गई थी। वहाँ एक टीला था, जो निश्चित रूप से, सदियों से वहाँ था और कोई नहीं जानता था कि वह वास्तव में क्या था। इसकी पहचान 1968 में एबला नामक स्थान के रूप में की गई थी और 1975 में एक महल के खंडहर में सत्रह हजार कीलाकार गोलियाँ मिलीं। यह निर्धारित किया गया था कि महल लगभग 2250 ईसा पूर्व में नष्ट हो गया था। यह पितृसत्तात्मक काल से कुछ शताब्दी पहले की बात होगी। अब कुछ लोगों ने कहा है कि यह सदी की सबसे बड़ी पुरातत्व खोज है। एबला गोलियों के महत्व और महत्व के बारे में बहुत सारी उत्कृष्ट बातें कही गई हैं। गोलियाँ एक ऐसे साम्राज्य का खुलासा करती हैं जिसका उस समय, लगभग 24^{वीं} शताब्दी ईसा पूर्व, मध्य पूर्व के अधिकांश भाग पर प्रभुत्व था, जो पहले अज्ञात था। यह एक प्रमुख साम्राज्य था। बाइबिल में पाए जाने वाले ग्रंथों में, शहर और व्यक्तिगत नाम गोलियों पर दिखाई देते हैं, जिनमें सदोम और अमोरा जैसे स्थान और एबर और अब्राहम जैसे नाम शामिल हैं। ऐसा नहीं है कि वहाँ का इब्राहीम बाइबिल में इब्राहीम के समान है, लेकिन व्यक्तिगत इब्राहीम का नाम आता है। ऐसा कहा जाता है कि प्रशासनिक ग्रंथों, सरकारी प्रकार की चीजों के अलावा, साहित्यिक ग्रंथ भी हैं जिनमें सृजन और बाढ़ के मिथक, भजन और संधि ग्रंथ और इस तरह की सभी प्रकार की सामग्री शामिल है। यह सब प्रकाशित नहीं हुआ है, और इस तक पहुंच बहुत सीमित है। जिन लोगों के पास पहुंच है, वे बहुत सावधान रहते हैं कि सीरियाई सरकार उनके खिलाफ न हो जाए, क्योंकि इन चीजों के अध्ययन में शामिल यहूदी पूर्वजों के साथ बाइबिल का बहुत अधिक संबंध है, इसलिए वे ज्यादा कुछ नहीं कह रहे हैं। और यह जानना कठिन है कि यह कब बदल सकता है। इसमें काफी समय लग सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिन लोगों के पास ग्रंथों तक पहुंच है, वे शायद राजनीतिक कारणों से, पुराने नियम के ग्रंथों के संबंध को कम महत्व दे रहे हैं। लेकिन, निष्कर्ष के रूप में, सामग्री के इस समूह से, बहुत सारी सामग्री है, यह स्पष्ट हो गया है कि पितृसत्तात्मक रीति-रिवाज, जैसा कि उत्पत्ति में वर्णित है, दूसरी

सहस्राब्दी ईसा पूर्व के ग्रंथों में परिलक्षित लोगों के करीब हैं। उनके बारे में पितृसत्तात्मक आख्यानो में परिलक्षित होता है। और दूसरी बात, और यह और भी महत्वपूर्ण हो सकता है, शुरुआती हिब्रू नाम उन नामों के वर्ग में फिट बैठते हैं जो दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में मेसोपोटामिया फिलिस्तीन में मौजूद थे, और विशेष रूप से उसके शुरुआती भाग में।

पितृसत्तात्मक नाम

अब उस नोट पर, मैं आपको ब्राइट, उनके *इज़राइल का इतिहास*, पृष्ठ 77 और 78 से पढ़ता हूँ। “पितृसत्तात्मक कथाओं में नाम उस वर्ग में पूरी तरह से फिट बैठते हैं जो दूसरी सहस्राब्दी में मेसोपोटामिया और फिलिस्तीन दोनों में मौजूद थे। उदाहरण के लिए, कुलपतियों के नाम, जैकब, ऊपरी मेसोपोटामिया के 18^{वीं} शताब्दी के एक पाठ में आते हैं। अब्राम नाम पहले राजवंश के बेबीलोनियाई पाठ से, संभवतः निष्पादन ग्रंथों से जाना जाता है। हालाँकि इस्साक नाम का उदाहरण नहीं दिया गया है और जोसफ का स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं है, दोनों पूरी तरह से विशिष्ट प्रारंभिक प्रकार के हैं। इसके अलावा, नाहोर और तेरह के नाम और याकूब और बिन्यामीन के पुत्रों के नाम मारी ग्रंथों में दिखाई देते हैं। ज़ेबुलुन नाम निष्पादन पाठ में आता है। गाद और दान को मारी से जाना जाता है। इश्माएल और शायद लेवी मारी में पाए जाते हैं। आशेर और इस्साकार 18^{वीं} सदी की मिस्र की सूची में पाए जाते हैं।” और फिर वह कहते हैं, “इसमें एबला पाठों को जोड़ा जाना चाहिए, जहां, जैसा कि हमें बताया गया है, बाइबिल से कई व्यक्तिगत नाम पाए जाते हैं: एबर अब्राम, इश्माएल, शाऊल, डेविड, इज़राइल, साथ ही अन्य। अब,” उन्होंने निष्कर्ष निकाला, “निश्चित रूप से इनमें से किसी भी मामले में हमारे पास शायद बाइबिल के कुलपतियों का उल्लेख भी नहीं है। लेकिन समकालीन ग्रंथों में ऐसे नामों की प्रचुरता स्पष्ट रूप से दिखाती है कि ऊपरी मेसोपोटामिया और उत्तरी सीरिया में वास्तव में मध्य कांस्य युग और सदियों पहले इज़राइल के पूर्वजों के समान आबादी थी। यह दोनों परंपरा की प्राचीनता में विश्वास को मजबूत करते हैं और बाइबिल के दावे में सत्यता जोड़ते हैं कि इज़राइल के पूर्वज इस सामान्य क्षेत्र से चले गए थे। लेकिन फिर एक महत्वपूर्ण कथन यह है, “नाम प्रारंभिक प्रकार के हैं। वे निश्चित रूप से बाद के इज़राइली नामकरण की विशेषता नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, बाद में इज़राइली नामकरण का अर्थ है कि यह सामग्री निर्वासन में लिखी गई थी।

वह कहते हैं, "कोई भी नाम स्वयं कुलपतियों का नहीं है और उनसे संबंधित लोगों के बहुत कम नाम पूरे बाइबिल काल में इज़राइल में उचित नामों के रूप में पाए जाते हैं।" मेरा मतलब है, आप बाद में पवित्रशास्त्र में इब्राहीम से नहीं मिलेंगे। तो वे कहते हैं, "इस संबंध में पितृसत्तात्मक आख्यान सबसे प्रामाणिक हैं।" तो यह उस तरह की चीज़ है जिसके बारे में एलन मैकरे बात करते हैं, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रकार की शुद्ध आज़ाएँ। ये अप्रत्यक्ष है, प्रत्यक्ष नहीं। लेकिन उस सामान्य तरीके से, पितृसत्तात्मक आख्यान उस समय में फिट बैठते हैं जिसमें वे स्वयं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

लौरा किंग और डेरेक स्कीन, रूबेन कैबेरेरा, डेव फॉग, बेन वॉट्स, केट टोर्टलैंड द्वारा लिखित
 टेड हिल्डेब्रान द्वारा रफ संपादित
 एमिली मैकएडम द्वारा अंतिम संपादन
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया